

दीनदयाल जी जहां कार्यकर्ताओं को निरन्तर सेवा के लिए प्रेरित करते थे, वहीं अपने विनोद से सबकी थकान भी दूर कर देते थे। एक बार संघ कार्यालय में—

हमें जम्मू कश्मीर में चल रहे सत्याग्रह से संबंधित समाचारों को देशभर के अखबारों में भेजना है। इसलिए बहुत सारे पते लिखे लिफाफों को तैयार करो।

हाँ, पते तो लिख दिए, अब जल्दी—जल्दी टिकट चिपकाता हूँ।

अरे टिकट उल्टी चिपकाओ भाई। तुम अकेले ही समाचार बनाने से लेकर टिकट तक चिपकाने का काम करते हो। अगर टिकटें सीधी चिपकाईं तो लगेगा कि हमारे कार्यालय में चपरासी तक नहीं है।